AI और रोज़गार: IMF के एशियाई नौकरी-विज्ञापन क्या बताते हैं?

अर्थव्यवस्था और रोज़गार | GS-3 | समाचार संदर्भ तिथि: 15 अक्टूबर 2026 (IMF क्षेत्रीय आर्थिक परिदृश्य, एशिया-प्रशांत, अध्याय 2) | प्रकाशित: 19 अक्टूबर 2026

IMF की अक्टूबर 2026 की एशिया-प्रशांत रिपोर्ट के अनुसार कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने एशिया में भर्ती की मांग को पहले ही बदलना शुरू कर दिया है, पर तस्वीर 'नौकरियाँ खत्म' जैसी सीधी नहीं है। असल निष्कर्ष तुलना का है: जिन पेशों में AI अधिक काम आ सकता है, वहाँ नियोक्ताओं की मांग कम AI-प्रभावित पेशों की तुलना में लगभग 10 प्रतिशत घटी है।

चित्र के अक्षर छोटे दिखें तो चित्र को छूकर बड़ा खोलें और ज़ूम करें।

रिपोर्ट किस आधार पर बनी है

यह अध्ययन 19 एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के लगभग 4 करोड़ ऑनलाइन नौकरी-विज्ञापनों (job postings) पर आधारित है। आँकड़े अप्रैल 2026 तक के हैं। इसका अर्थ है कि रिपोर्ट 'नई भर्ती की मांग' को मापती है, पहले से काम कर रहे लोगों की छँटनी को नहीं। रिपोर्ट खुद मानती है कि वास्तविक भर्ती ऑनलाइन विज्ञापनों से अलग हो सकती है, क्योंकि कंपनियाँ दूसरे माध्यम भी अपनाती हैं।

विश्लेषण की मुख्य युक्ति यह है कि एक ही अर्थव्यवस्था, एक ही उद्योग और एक ही महीने के भीतर 'अधिक AI-प्रभावित' और 'कम AI-प्रभावित' पेशों की तुलना की जाती है, और दूरस्थ कार्य (remote work) की गुंजाइश को भी अलग से गिना जाता है। इससे महामारी के बाद की अति-भर्ती या घर से काम जैसे दूसरे कारणों का असर AI से अलग किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, कोडिंग को अधिक प्रभावित पेशा माना गया है, जबकि आपूर्तिकर्ताओं से संबंध सँभालने का काम कम प्रभावित है।

मुख्य निष्कर्ष

पहला, नवंबर 2022 में ChatGPT के आने से पहले दोनों तरह के पेशों में भर्ती लगभग साथ-साथ चलती थी। 2023 के मध्य तक बहुत फर्क नहीं दिखा, पर 2024 और 2025 तक अधिक प्रभावित पेशों में मांग साफ़ कमज़ोर हुई और अंतर लगभग 10 प्रतिशत तक पहुँचा।

दूसरा, यह गिरावट स्थिर होती दिखती है, जबकि AI की क्षमता तेज़ी से बढ़ी है। रिपोर्ट AI की क्षमता को उस काम की लंबाई से मापती है जो वह पूरा कर सकता है। शुरुआत में AI कुछ सेकंड के काम कर पाता था और असर नगण्य था। जब वह ऐसे काम करने लगा जिनमें इंसान को एक घंटा लगता (जैसे छोटी कोड-लाइब्रेरी की गड़बड़ी ढूँढकर सुधारना), तब तक मांग लगभग 10 प्रतिशत गिर चुकी थी। अब AI पूरे दिन के काम (जैसे मशीन लर्निंग मॉडल का प्रशिक्षण) कर सकता है, फिर भी स्थिति और नहीं बिगड़ी।

तीसरा, इसका एक कारण नए AI कौशलों की बढ़ती मांग है, जैसे प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग, रिट्रीवल-ऑगमेंटेड जनरेशन और AI एजेंट बनाना। ये कौशल 2023 से पहले लगभग नहीं थे। एशिया में लगभग 6 प्रतिशत कंपनियाँ अपने विज्ञापनों में AI कौशल माँगती हैं। रिपोर्ट के अनुसार यह कंपनियों के AI अपनाने की निचली सीमा है, क्योंकि जो कंपनियाँ AI से सिर्फ़ नई भर्ती घटाती हैं, वे इसमें नहीं गिनी जातीं। AI अपनाने वाली कंपनियों में कर्मचारियों की मांग बाकी कंपनियों से तेज़ बढ़ रही है, यहाँ तक कि अधिक प्रभावित पेशों में भी।

चौथा, कुल असर दो ताकतों का जोड़ है: AI जहाँ अधिक उपयोगी है वहाँ कम भर्ती, और AI चलाने में सक्षम लोगों के लिए नए अवसर। अब तक के प्रमाण में कम भर्ती वाली ताकत भारी है, इसलिए अधिक प्रभावित पेशों में मांग घटी है। कम आय वाली अर्थव्यवस्थाओं में अब तक असर कम दिखा है।

भारत जैसी युवा अर्थव्यवस्थाओं के लिए अर्थ

रिपोर्ट एशिया में जनसांख्यिकी का विभाजन दिखाती है। दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में कार्यशील जनसंख्या अभी बढ़ रही है, जो सही रोज़गार मिलने पर 'जनसांख्यिकीय लाभांश' बन सकती है। पूर्वी एशिया की बूढ़ी होती अर्थव्यवस्थाओं में उलटा है: श्रमिकों की कमी की चिंता है, और वहाँ AI कमी की भरपाई में मदद कर सकता है, बशर्ते शुरुआती झटके सँभाल लिए जाएँ।

भारत, इंडोनेशिया और फिलीपींस जैसी अर्थव्यवस्थाओं के बारे में रिपोर्ट का तर्क है कि वे अभी आंशिक रूप से सुरक्षित हैं, क्योंकि उनके बहुत से कामगार कृषि जैसे क्षेत्रों में हैं जिन पर AI का असर कम है। पर यह सुरक्षा एक जाल भी हो सकती है। इन देशों को कृषि से निकालकर उच्च उत्पादकता वाले विनिर्माण और सेवा क्षेत्र की नौकरियों तक पहुँचाना है, और ठीक वही सीढ़ी AI से कठिन हो सकती है। इसलिए जिन अर्थव्यवस्थाओं पर आज AI का असर सबसे कम है, उनके लिए दाँव कल सबसे बड़ा हो सकता है।

पृष्ठभूमि के आँकड़े भी ध्यान देने योग्य हैं। एशिया में बेरोज़गारी दर दुनिया के अधिकांश क्षेत्रों से कम है, पर यह कमज़ोरियाँ छिपाती है: अनौपचारिक रोज़गार बहुत है, कुछ उभरते देशों में स्नातक युवाओं में बेरोज़गारी 30 प्रतिशत के करीब है, और फिलीपींस में लगभग 70 प्रतिशत स्नातक ऐसे काम में हैं जिनमें उनकी डिग्री ज़रूरी नहीं।

श्रमिकों के समायोजन की चुनौती

रिपोर्ट एशिया के 6.5 करोड़ करियर-इतिहासों के आधार पर बताती है कि एक वर्ष में केवल लगभग 5 प्रतिशत कामगार पेशा बदलते हैं, और हाल के वर्षों में वे कम AI-प्रभावित पेशों की ओर बढ़ते भी नहीं दिखे। इसलिए नीति-निर्माताओं से कहा गया है कि वे देखें कि कौशल-उन्नयन और गतिशीलता के लिए सक्रिय श्रम-बाज़ार नीतियाँ और अस्थायी आय-सहायता अभी चाहिए या नहीं, और यह भी सुनिश्चित करें कि नीतियाँ कामगारों को ऐसे कामों में न फँसा दें जिनकी मांग लगातार घट रही है।

रिपोर्ट आगे के लिए अधिक तीव्र परिदृश्य के तीन प्रश्न भी उठाती है: क्या AI को श्रम-अनुकूल दिशा में मोड़ा जा सकता है, क्या AI-संबंधी मुनाफ़े पर कर लगाकर परिवारों को आय-सहायता दी जा सकती है, और देश अत्याधुनिक AI उपकरणों तक अपनी पहुँच कैसे बनाए रखें।

परीक्षा की दृष्टि से सावधानियाँ

इस रिपोर्ट के आँकड़ों को लिखते समय शब्दों का ध्यान रखें। 'लगभग 10 प्रतिशत' सापेक्ष तुलना है, यानी अधिक प्रभावित बनाम कम प्रभावित पेशे। इसका मतलब यह नहीं कि एशिया की 10 प्रतिशत नौकरियाँ खत्म हुईं, और न यह कि भारत में बेरोज़गारी इतनी बढ़ी। '6 प्रतिशत कंपनियाँ' का अर्थ है कि इतनी कंपनियाँ नौकरी-विज्ञापन में AI कौशल माँगती हैं, यह सभी AI उपयोग की जनगणना नहीं है। आँकड़े नौकरी-विज्ञापनों पर आधारित हैं, इसलिए पूरी भर्ती या मज़दूरी और घंटों की तस्वीर नहीं देते।

एक और सावधानी: AI अपनाने वाली कंपनियों में कर्मचारियों की मांग का तेज़ बढ़ना इस बात का प्रमाण नहीं कि AI ने ही रोज़गार बढ़ाया। यह सहसंबंध है, कारण-परिणाम का अंतिम प्रमाण नहीं। 'AI-प्रभावित (exposure)' का अर्थ भी 'स्वचालन से खत्म होने वाला' नहीं, बल्कि यह है कि AI की क्षमता उस पेशे के कौशलों से कितनी मेल खाती है।

प्रारंभिक परीक्षा शैली: अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. रिपोर्ट के आँकड़े नौकरी-विज्ञापनों पर आधारित हैं।
2. रिपोर्ट के अनुसार एशिया की 10 प्रतिशत नौकरियाँ समाप्त हो गईं।

3. लगभग 6 प्रतिशत कंपनियाँ नौकरी-विज्ञापनों में AI कौशल माँगती हैं।
उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं ?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :
I. अधिक AI-प्रभावित पेशों में नियोक्ता-मांग कम प्रभावित पेशों की तुलना में लगभग 10 प्रतिशत घटी।
II. लगभग 6 प्रतिशत कंपनियाँ नौकरी-विज्ञापनों में AI कौशल माँगती हैं।
III. एक वर्ष में लगभग 5 प्रतिशत कामगार पेशा बदलते हैं।
उपर्युक्त कथनों से निम्नलिखित में से कौन-सा/से तार्किक निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं ?
1. कथन I सापेक्ष तुलना बताता है, यह नहीं कि एशिया की 10 प्रतिशत नौकरियाँ समाप्त हुईं।
2. कथन II को कंपनियों के AI उपयोग की पूरी गणना माना जा सकता है।
3. कथन I और III को साथ पढ़ने पर संकेत मिलता है कि कामगारों का धीमा पेशा-बदलाव समायोजन को कठिन बना सकता है।
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर उत्तर चुनिए :

(a) केवल 1

(b) केवल 1 और 2

(c) केवल 1 और 3

(d) केवल 2 और 3

उत्तर: (c)

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :
कथन-I : IMF के अनुसार अधिक AI-प्रभावित पेशों में भर्ती-मांग की गिरावट स्थिर होती दिखती है।
कथन-II : IMF के अनुसार AI अपनाने वाली कंपनियों में कर्मचारियों की मांग अन्य कंपनियों की तुलना में तेज़ बढ़ रही है और नए AI कौशलों की मांग बढ़ रही है।
उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है ?

(a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या है

(b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं, लेकिन कथन-II, कथन-I की सही व्याख्या नहीं है

(c) कथन-I सही है, लेकिन कथन-II गलत है

(d) कथन-I गलत है, लेकिन कथन-II सही है

उत्तर: (a)

मुख्य परीक्षा शैली: अभ्यास प्रश्न

1. AI के रोज़गार पर प्रभाव को केवल नौकरियों की समाप्ति के रूप में देखना क्यों अधूरा है? IMF के एशियाई साक्ष्यों के संदर्भ में समझाइए। (150 शब्द, 10 अंक)

2. नौकरी-विज्ञापन आधारित आँकड़ों की सीमाएँ बताते हुए AI के श्रम-बाज़ार प्रभाव के आकलन में सावधानी क्यों ज़रूरी है? (150 शब्द)

उत्तर की रूपरेखा:

भूमिका में: बताएँ कि IMF की अक्टूबर 2026 की एशिया-प्रशांत रिपोर्ट 19 एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के लगभग 4 करोड़ नौकरी-विज्ञापनों पर आधारित है और वह केवल नई भर्ती की मांग मापती है, पहले से काम कर रहे लोगों की छँटनी नहीं; इसलिए प्रभाव को केवल 'नौकरियाँ खत्म' के रूप में देखना अधूरा है।

मुख्य भाग में: समझाएँ कि अधिक AI-प्रभावित पेशों में नियोक्ता-मांग कम प्रभावित पेशों की तुलना में लगभग 10 प्रतिशत घटी, पर यह सापेक्ष तुलना है और गिरावट स्थिर होती दिखती है; साथ ही प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग जैसे नए AI कौशलों की मांग बढ़ी है और लगभग 6 प्रतिशत कंपनियाँ विज्ञापनों में AI कौशल माँगती हैं। असमान प्रभाव भी रखें: भारत जैसी युवा, कृषि-निर्भर अर्थव्यवस्थाओं के लिए आगे का जोखिम बनाम बूढ़ी होती अर्थव्यवस्थाओं में श्रम-कमी की भरपाई की संभावना। नीति पर सुझाएँ: कौशल-उन्नयन, सक्रिय श्रम-बाज़ार नीतियाँ और अस्थायी आय-सहायता, क्योंकि एक वर्ष में केवल लगभग 5 प्रतिशत कामगार पेशा बदलते हैं।

निष्कर्ष में: निष्कर्ष रखें कि AI का असर नौकरियों की समाप्ति से ज़्यादा काम के स्वरूप और कौशल-माँग के बदलने का है; पर साक्ष्य अभी आरंभिक हैं, इसलिए सहसंबंध को कारण-परिणाम का प्रमाण न मानें।

स्रोत

IMF, Regional Economic Outlook: Asia and Pacific, October 2026, Chapter 2 'Labor Markets in Asia: Challenges and Opportunities in the AI Era'

IMF, Regional Economic Outlook for Asia and Pacific, October 2026 (रिपोर्ट पृष्ठ)

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQ)

संक्षिप्त उत्तर: यह अध्ययन 19 एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के लगभग 4 करोड़ ऑनलाइन नौकरी-विज्ञापनों (job postings) पर आधारित है। आँकड़े अप्रैल 2026 तक के हैं।

प्रश्न: रोजगार संबंधी अध्ययन किस आँकड़ा-आधार पर बना है?

यह अध्ययन 19 एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के लगभग 4 करोड़ ऑनलाइन नौकरी-विज्ञापनों (job postings) पर आधारित है। आँकड़े अप्रैल 2026 तक के हैं। इसका अर्थ है कि रिपोर्ट 'नई भर्ती की मांग' को मापती है, पहले से काम कर रहे लोगों की छँटनी को नहीं। रिपोर्ट खुद मानती है कि वास्तविक भर्ती ऑनलाइन विज्ञापनों से अलग हो सकती है, क्योंकि कंपनियाँ दूसरे माध्यम भी अपनाती हैं।

प्रश्न: AI और जनसांख्यिकी का युवा और वृद्ध होती अर्थव्यवस्थाओं में क्या अलग संदर्भ है?

रिपोर्ट एशिया में जनसांख्यिकी का विभाजन दिखाती है। दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया में कार्यशील जनसंख्या अभी बढ़ रही है, जो सही रोज़गार मिलने पर 'जनसांख्यिकीय लाभांश' बन सकती है। पूर्वी एशिया की बूढ़ी होती अर्थव्यवस्थाओं में उलटा है: श्रमिकों की कमी की चिंता है, और वहाँ AI कमी की भरपाई में मदद कर सकता है, बशर्ते शुरुआती झटके सँभाल लिए जाएँ।

प्रश्न: कामगारों के पेशा बदलने और समायोजन पर रिपोर्ट क्या बताती है?

रिपोर्ट एशिया के 6.5 करोड़ करियर-इतिहासों के आधार पर बताती है कि एक वर्ष में केवल लगभग 5 प्रतिशत कामगार पेशा बदलते हैं, और हाल के वर्षों में वे कम AI-प्रभावित पेशों की ओर बढ़ते भी नहीं दिखे। इसलिए नीति-निर्माताओं से कहा गया है कि वे देखें कि

कौशल-उन्नयन और गतिशीलता के लिए सक्रिय श्रम-बाज़ार नीतियाँ और अस्थायी आय-सहायता अभी चाहिए या नहीं, और यह भी सुनिश्चित करें कि नीतियाँ कामगारों को ऐसे कामों में न फँसा दें जिनकी मांग लगातार घट रही है।